चित्रलेखा

वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका

2019-2020

श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान,
तिरुवनंतपुरम

श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान, त्रिवेंद्रम की वार्षिक गृह पत्रिका

चित्रलेखा

मुख्य संरक्षक
डॉ. आशा किशोर
निदेशक

संपादक
डॉ. अनुज्ञा भट्ट
वैज्ञानिक एफ
थ्रोम्बोसिस अनुसंधान इकाई

संपादकीय सलाहकार समिति
डॉ. बी. संतोष कुमार
कुलसचिव

फोटोग्राफी
मेडिकल इल्लस्ट्रेषन प्रभाग
श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान

रूपांकन
षहनास कबीर

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी विचार है। इनसे संपादक एवं संस्थान का सहमत होना अनिर्वार्य नहीं है।

विषयसूची

	पृष्ठ संख्या
श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान –परिचय	04
संदेश-निदेशक	05
संदेश-प्रधान पीएमटी स्कंध	06
संदेश -संकाय अध्यक्ष,	07
संदेश –कुलसचिव	08
संपादकीय	09
73-वां गणतंत्र दिवस समारोह 2019	10-11
हिन्दी पखवाड़ा समारोह	12
कैंसर के इलाज के लिए कुरक्युमिन वेफर ट्रीटमेंट	13
स्टैच्यू ऑफ यूनिटी, गुजरात यात्रा की अविस्मरणीय अनुभूतियाँ	14-16
भारत में पार्किंसंस रोग के आनुवांशिक आधार की पहचान करने के लिए श्री चित्रा को भारत-जर्मन अनुसंधान के लिए यू.एस से वित्त पोषण	17
घरेलू माँ से सूपर हीरो माँ(कहानी)	18-19
आप लोगों ने मुझे साहसिक बनाया(लेख)	20
गाँधी और स्वास्थ्यः 150 साल का जश्न	21-23
टोटेम पोल्स(कुलदेवता के स्तंभ):एक अद्वतीय कलात्मक संस्कृति की झलक	24-25
श्री चित्रा और विप्रो का हस्तमिलाप	26
इंतज़ार(कविता)	27-28
चुटकुले	29
आगे बढ़ने का जुनून हो अगर	30
हिन्दी प्रश्नोत्तरी, मुहावरे	31
नए उन्नत कार्डियोलॉजी प्रयोगशाला का उद्घाटन	32
डायालिसिस यूनिट	33
अंतर्राष्ट्रीय योगा दिवस	34
मोलिकुलर जेनेटिक्स और न्यूरो इम्यूनोलॉजी	35

श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान- परिचय

संस्थान का प्रारंभ सन् 1973 में हुआ जब त्रावणकोर के शाही घराने ने केरल की जनता और केरल सरकार को एक बहुमंजली इमारत भेंट की। सन् 1976 में योजना आयोग के तत्कालीन उपाध्यक्ष श्री .पी.एन हस्कर ने श्री चित्रा चिकित्सा केंद्र का उद्घाटन किया और इसके साथ ही मरीजों के लिए विविध सेवाओं और अंतरंग चिकित्सा का आरंभ हुआ। उसके शीघ्र बाद साटेलमोन्ढ महल, पूजप्पुरा के अंदर जैवचिकित्सीय प्रौद्योगिकी स्कंध का आरंभ हुआ जो कि अस्पताल स्कंध से 8 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यह इमारत भी शाही घराने द्वारा भेंट दी गई थी।

भारत सरकार ने आयुर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी विज्ञान को एकल बृहत संस्थान में विलय करने की अवधारणओं को अत्यंत महत्वपूर्ण माना और सन् 1980 में एक संसदीय अधिनियम के द्वारा इस संस्थान को विज्ञान एवं प्रौद्योगिका विभाग के अधीन राष्ट्रीय महत्व का संस्थान घोषित करके इसका नामकरण "श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान,त्रिवेंद्रम" किया।

15 जून 1992 को भारत सरकार के तत्कालीन वित्त मंत्री माननीय डॉ. मनमोहन सिंह ने संस्थान के तीसरे आयाम अच्युत मेनन सेंटर फॉर हेल्थ साईंस स्टडीस (ए.एम.एस.सी.एच.एस.एस) की आधार शिला रखी। उसके बाद 30 जनवरी, 2000 को तत्कालीन विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं मानव संसाधन विकास मंत्री माननीय श्री.मुरली मनोहर जोशी ने अच्युत मेनन केन्द्र को राष्ट्र के लिए समर्पित किया।

निदेशक की कलम से

यह खुशी की बात है कि हमारे संस्थान से हिन्दी गृह पत्रिका 'चित्रलेखा ' का ई-संस्करण प्रकाशित हो रहा है। 'चित्रलेखा' संस्थान के डॉक्टर , अभियंता, वैज्ञानिक, अधिकारी, कर्मचारियों और छात्रों के विचार एवं प्रतिभा को हिन्दी में दर्शाने का माध्यम है। इसे संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन को बढ़ावा देने की दूसरी सीढ़ी मानना चाहिए। भारत सरकार के राजभाषा नीति के अनुसार हिन्दी भाषा को बढ़ावा देने वाले इस कदम की सफलता के लिए पूरे संस्थान का योगदान अनिवार्य है। मैं आशा करती हूँ कि यह 'चित्रलेखा' पत्रिका संस्थान में प्रचलित हो। इसके पीछे काम करने वाले सभी लोगों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

आपका

प्रो. आशा किशोर

निदेशक,एस.सी.टी.आई.एम.एस.टी

प्रमुख बी.एम.टी स्कंध की कलम से

मुझे यह जानकर खुशी है कि हम संस्थान की हिन्दी गृहपत्रिका "चित्रलेखा" को हिन्दी भाषा को बढ़ावा देने के लिए पूरे चित्रा परिवार को प्रोत्साहित करने एवं प्रेरित करने के उद्देश्य से प्रकाशित करने वाले हैं। भारत सरकार अपने विभागों के ज़रिए हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न योजनाओं को तैयार कर रहा है । राष्ट्रीय महत्व का संस्थान होने के नाते , राजभाषा को बढ़ावा देने के लिए श्री चित्रा की भी ज़िम्मेदारी है। मैं ने ध्यान दिया है कि संस्थान के राजभाषा कार्यान्वयन समिति के कर्मचारियों एवं छात्रों के लिए विभिन्न कार्यक्रमों जैसे कि हिन्दी पखवाड़ा समारोह के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन कर रहे हैं और हिन्दी गृह पत्रिका चित्रलेखा का भी प्रकाशन कर रहे हैं।

इस अवसर पर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की सफलता की कामना करता हूँ और चित्रलेखा के प्रकाशन के लिए कार्य कर रहे सभी लोगों को बधाइयाँ देता हूँ।

जय हिन्द।

डॉ. हरिकृष्ण वर्मा पी आर

प्रधान, बीएमटी स्कंध

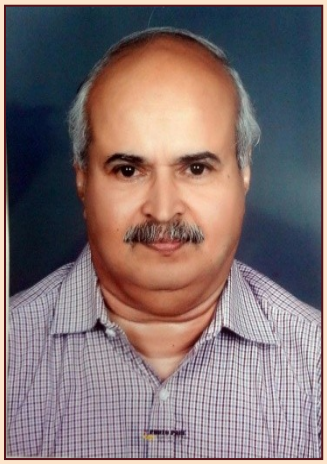

संकायाध्यक्ष की कलम से

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि चित्रलेखा का अगला अंक प्रकाशन के लिए तैयार है। यह गृह-पत्रिका हमारे राष्ट्रभाषा हिन्दी में, अपने कलात्मक एवं लेखन कौशल को व्यक्त करने के लिए चित्रा परिवार के सदस्यों को एक अवसर प्रदान करती है। यह प्रकाशन संचार के हिन्दी माध्यम की दृश्यता को बढ़ाने के लिए भी योगदान देगा। मैं इस अवसर पर चित्रलेखा के सभी योगदानकर्ताओं एवं संपादक को बधाई देता हूँ।

शंकर शर्मा पी
संकायाध्यक्ष

कुलसचिव की कलम से

मैं एससीटीआईएमएसटी का हिन्दी गृह पत्रिका चित्रलेखा के एक और संस्करण प्रकाशित करने केलिए संपादकीय दल का सहारना करता हूँ।
राजभाषा कार्यान्वयन समिति के संयोजक के रूप में, मुझे संस्थान में राजभाषा के कार्यान्वयन के लिए संकाय सदस्यों और कर्मचारियों की प्रतिज्ञाबद्ताओं पर गर्व है।
चित्रलेखा संस्थान में संकाय और कर्मचारियों द्वारा एक सामाजिक ज़िम्मेदारी और सामाजिक लक्ष्य के रूप में किए गए विद्वानों और गैर-विद्वानों की गतिविधियों का एक विशाल स्पेक्ट्रम है। यह उनके अनुभवों को रचनात्मक बनाने के अलावा उनके अनुभवों को व्यक्त करने केलिए एक आदर्श मंच है।

मेरी शुभकामनाएँ एससीटीआईएमएसटी के दल के साथ है।

पढ़ने का आनंद लो।

डॉ संतोष कुमार बी
कुलसचिव

संपादकीय

चित्रलेखा का यह नया अंक आपको समर्पित करते हुए मुझे असीम प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। यह अंक आपके अनुभवों, आपकी भावनाओं, एवं हमारे संस्थान की उपलब्धियों को समाहित किए हुए हैं। कहानियाँ, यात्रा अनुभव, हंसी के चुलकुले आपको गुदगुदागें।

चित्रलेखा के इस अंक के ई. प्रकाशन के लिए मैं ह्रदय से प्यारे निदेशक, प्रमुख बीएमटी विंग एवं सभी लेखकों का आभार प्रकट करती हूँ।
मुझे उम्मीद ही नहीं विश्वास हैं आप सब इसी तरह इस यात्रा में हमारा सहयोग करते रहेंगे एवं चित्रलेखा को चित्रा के जन-जन का हिस्सा बनाएँगे।

सधन्यवाद,

अनुज्ञा भट्ट

संपादक

73 वां स्वतंत्रता दिवस समारोह 2019(अस्पताल स्कंध)

15 अगस्त को सुबह 08.00 बजे अस्पताल स्कंध में निदेशक द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया।

73 वां स्वतंत्रता दिवस समारोह 2019(बीएमटी स्कंध)

15 अगस्त को सुबह 08.00 बजे अस्पताल स्कंध में निदेशक द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया।

हिन्दी पखवाड़ा समारोह 2019

हिन्दी पखवाड़ा समारोह का उद्घाटन कर्मचारियों एवं अधिकारियों की उपस्थिति में बड़े उत्साह एवं उमंग के साथ 16/09/2019 को किया गया। समारोह के दौरान संस्था के कर्मचारियों के लिए टिप्पण एवं आलेखन/प्रश्नोत्तरी/तस्वीर क्या बोलती है/सुलेखन/हिन्दी में श्रुतलेख जैसी हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ।

समापन सम्मेलन एन.एच वाडिया सम्मेलन कक्ष , एससीटीआईएमएसटी में 30/09/2019 को संपन्न हुआ। समारोह में डॉ. जिस्सी वी.टी, वैज्ञानिक ने वंदनागीत एवं डॉ. संतोष कुमार बी, कुलसचिव, एससीटीआईएमएसटी ने स्वागत किया। डॉ. शंकर शर्मा पी, संकाय अध्यक्ष ने समारोह का उद्घाटन किया और हिन्दी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को सम्मानित किया। संसाधन व्यक्ति डॉ. शिवकुमार पी जे, प्रिनसिपल, केरल हिन्दी प्रचार सभा, राखाल गॉयतोण्डे, प्राचार्य, एएमसी और कमलेश गुलिया, वैज्ञानिक ने समारोह में आशीर्वचन की प्रस्तुती की। विशाल वी प्रभु, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक ने कृतज्ञता ज्ञापित किया।

समापन समारोह के दौरान कर्मचारियों एवं अधिकारियों के लिए यंत्रानुवाद की समस्या विषय पर हिन्दी कार्यशाला का आयोजन हुआ। डॉ. शिवकुमार पी जे, प्रिन्सिपल, केरल हिन्दी प्रचार सभा ने कार्यशाला का नेतृत्व किया।

कैंसर के इलाज के लिए श्री चित्रा का कुरकुमिन वेफर ट्रीटमेंट

श्री चित्रा तिरुनाल संस्थान को कैंसर के इलाज में कीमोथेरापी के बदले प्रयोग किए जाने वाले कुरकुमिन वेफर ट्रीटमेंट के लिए यू एस पेटेंट प्राप्त हुआ। श्री चित्रा की डॉ.लिसी कृष्णन की टीम द्वारा हल्दी से निकाला गए कुरकुमिन के प्रयोग से इलाज के मार्ग को पेटेंट प्राप्त हुआ है। अनुमान किया जाता है कि वैधानिक परीक्षणों को पूरा करने के दो साल बाद, व्यावहारिक रूप से यह उपचार के लिए उपलब्ध होंगे।

तकनीक

इलाज के लिए हल्दी से निकाले जाने वाले कुरकुमिन,प्लास्मा प्रोटीन,आल्बुमिन और फाईब्रिनोजन के मिश्रण से एक पतली परत(वेफर) को तैयार किया जाता है। जब कैंसर प्रभावित अंग पर यह परत लगाते है तब टिशू प्रवाही हो जाता है, कुरकुमिन कैंसर प्रभावित कोशिका में अवशेषित कर लिया जाता है। कैंसर के फैलाव को रोकने में कुरकुमिन कितना फाइदेमंद है, यह पहले से ही प्रमाणित हो चुका है। किंतु चुनौती यह थी कि इसे कैंसर कोशिकाओं में कैसे पहूँचाए। यह फाईब्रिनोजन ऑपरेशन के पश्चात होने वाले खून के बहाव को रोकने में भी फायदेमंद है।

लाभ

वर्तमान समय में जो कीमोथेरापी का इलाज है, उसमें केंसर कोशिकाओं के साथ-साथ गैर कैंसर कोशिकाओं भी नष्ट हो जाता है। उल्टी तथा बालों का झड़ना इसका दुष्प्रभाव है। कुर्रकुमिन वेफर के उपचार के फलस्वरूप इसका दुषप्रभाव पूर्ण रूप से नष्ट हो जाएगा। इलाज का खर्च भी कम होगा।

यू.एस पेटेंट मिलने के फलस्वरूप श्री चित्रा संस्थान द्वारा यह तकनीक फार्मस्यूटिकेल रिसर्च संस्थानों को सौंप दिया जाएगा। कानूनी अनुमति लेना उनका कर्तव्य होगा। इसमें कम से कम दो साल लगेंगे। श्री चित्रा द्वारा पहले ही कुरकुमिन और एलबुमिन युक्त तकनीक को विकसित कर सौंप दिया गया है। इसका पेटेंट जल्दी ही उपलब्ध होंगे।

स्टैच्यू ऑफ़ यूनिटी, गुजरात यात्रा की अविस्मरणीय अनुभूतियाँ

यह सच है की गुजरात की यात्रा मेरी इच्छा सूची पर बहुत लंबे समय से थी, लेकिन मेरा सपना तब सच हुआ, जब मुझे इस वर्ष सितम्बर के महीने में अचानक वड़ोदरा के पारिवारिक दौरे पर स्टैच्यू ऑफ़ यूनिटी पर जाने का मौका मिला। मुझे इस अप्रतिम स्थल की यादें साझा करने में अत्यंत खुशी हो रही है।

स्टैच्यू ऑफ़ यूनिटी, भारत रत्न सरदार वल्लभ भाई पटेल की विशालकाय एवं भव्य मूर्ति है जिसे गुजरात में सरदार सरोवर बांध, केवडिया में साधु बेट नामक नदी-द्वीप पर स्थापित किया गया है। सरदार पटेल एक प्रखर राजनेता और स्वतंत्रता कार्यकर्ता थे जिन्होंने आजादी के आंदोलन में अहिंसा का अनुसरण किया। पटेल स्वतंत्र भारत के पहले उप-प्रधान मंत्री और गृह मंत्री बने। पटेल अपने कुशल और प्रखर नेतृत्व के लिए बहुत सम्मानित थे, उन्होंने आजादी के तुरंत बाद 562 रियासतों को भारत का एकल संघ बनाने के लिए एकजुट किया था। उन्हें भारत के लोह पुरुष के नाम से जाना जाता है।

भारतीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा 31 अक्टूबर 2018 के दिन, सरदार पटेल की 143 वीं जयंती दिवस पर इस प्रतिमा का उद्घाटन किया गया था। भारतीय मूर्तिकार पद्म भूषण, राम वी सुतार द्वारा डिजाइन की गयी 182 मीटर ऊँची यह प्रतिमा देश की यूनिटी/ एकता की प्रतीक है। पटेल के सम्मान में एकता की अनूठी मिसाल देते हुए, 'लोहा अभियान' के तहत देशभर के 6 लाख गांवों की 169,078 जगहों से कुल 135 मीट्रिक टन स्क्रैप लोहा धातु स्क्रैप (मुख्य रूप से कृषि उपकरण स्क्रैप) और मिटटी को एकत्र किया गया था। जिसमें से लगभग 109 स्क्रैप टन का उपयोग प्रसंस्करण के बाद प्रतिमा की नींव बनाने के लिए किया गया था। डिजाइनिंग सहित मात्र 46 महीनों में लार्सन एंड टुब्रो लिमिटेड के द्वारा 70,000 टन सीमेंट, 6,000 मीट्रिक टन स्ट्रक्चरल स्टील, 18,500 मीट्रिक टन सुदृढीकरण सलाखों, और लगभग 1,700 टन कांस्य का उपयोग करके इस अप्रतिम प्रतिमा को बनाया गया। कुल 250 इंजीनियर और 3,700 कर्मचारी कर्मचारियों ने इस निर्माण के लिए काम किया।

स्टैच्यू ऑफ यूनिटी की अनेक विशेषताएं है। 182 की ऊँचाई को विशेष रूप से गुजरात विधानसभा की सीटों की संख्या से मेल खाने के लिए चुना गया था। प्रतिमा 180 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चलने वाली हवाओं का सामना कर सकती है और रिक्टर पैमाने पर 6.5 माप तक के भूकंप को (भूकंपीय क्षेत्र IV), जो 10 किमी की गहराई पर और 12 किमी प्रतिमा के दायरे में हो, झेल सकती है।

स्टैच्यू ऑफ़ यूनिटी

अधिकतम स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए दो 250-टन के द्रव्यमान वाले डैम्पर्स का उपयोग किया गया है। संरचना की कुल ऊंचाई 240 मीटर है, जिसका आधार 58 मीटर एवं 182 मीटर की मूर्ति है। स्टैचू पर कांस्य के आवरण की मोटाई 8 मिमी है और जैकेट पर बटन का व्यास 1.1 मीटर है। परियोजना की कुल लागत लगभग 2,989 करोड़ रुपये आंकी गई है।

प्रतिमा को पाँच क्षेत्रों में विभाजित किया गया है, जिनमें से केवल तीन ही जनता के लिए सुलभ हैं। पहला क्षेत्र प्रतिमा के आधार से पिंडली तक का है, जिसमें तीन स्तर हैं और इसमें एक प्रदर्शनी क्षेत्र, परछत्ती और छत शामिल हैं। इसके अलावा इस क्षेत्र में स्मारक उद्यान और संग्रहालय भी बनाया गया है। इस संग्रहालय में सरदार पटेल के जीवन और उनके योगदानों को सूचीबद्ध किया गया है। दृश्य-श्रव्य गैलरी में पटेल पर 15 मिनट की प्रस्तुति दिखाई जाती है और राज्य की जनजातीय संस्कृति का भी वर्णन किया जाता है। दूसरा क्षेत्र पटेल की जांघों तक पहुंचता है। प्रतिमा के पैर बनाने वाले ठोस टॉवर में प्रत्येक में दो लिफ्ट हैं। प्रत्येक लिफ्ट 26 लोगों को एक बार में गैलरी देखने के लिए केवल 30 सेकंड में ले जा सकती है। तीसरे क्षेत्र में 153 मीटर की ऊंचाई पर स्थित 135 मीटर की एक विशेष गैलरी है, जो एक समय में 200 आगंतुकों को समायोजित कर सकती है। गैलरी में इतनी ऊंचाई से स्टैच्यू ऑफ यूनिटी वाल, नर्मदा बांध, सतपुडा और विंध्याचल की सुंदर पर्वत श्रृंखलाओं आदि अद्भुत दृश्यों का आनंद लिया जा सकता है। जोन 4 रखरखाव क्षेत्र है जबकि अंतिम क्षेत्र में मूर्ति के सिर और कंधे शामिल हैं। प्रतिमा के आसपास 5 किलोमीटर की परिधि में सेल्फी पॉइंट भी बनाये गए है।

3 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए प्रवेश नि: शुल्क है, जबकि बाकी सभी के लिए यह 350 रुपये प्रति व्यक्ति है। इस टिकट में फूलों की घाटी, सरदार पटेल स्मारक, संग्रहालय और ऑडियो-विजुअल गैलरी, स्टैच्यू ऑफ यूनिटी साइट और सरदार सरोवर बांध, कैक्टस पार्क आदि शामिल है। इस टिकट में हॉप हॉप ऑन हॉप ऑफ बस सेवा भी उपलब्ध है जिसके लिए प्रयास बसों को सुन्दर तरीके से लगाया गया है। बस के अंदर मौजूद गाइड आपको तीन अलग-अलग भाषाओं, हिंदी, गुजराती

प्रदर्शनी क्षेत्र: पटेल के जीवन का चित्रांकन

प्रदर्शनी क्षेत्र

एकता के बिना जनशक्ति एक ताकत नहीं है जब तक कि इसे सामंजस्य नहीं किया जाता है और ठीक से एकजुट नहीं किया जाता है, तब यह आध्यात्मिक शक्ति बन जाती है" सरदार वल्लभ भाई पटेल

गैलरी में दृश्य अवलोकन के लिए जाली

पर्वत श्रृंखलाओं में स्टैच्यू ऑफयूनिटी भीत

हॉप हॉप ऑन हॉप ऑफ बस

इस टिकट में हॉप हॉप ऑन हॉप ऑफ बस सेवा भी उपलब्ध है जिसके लिए प्रयाप्त बसों को सुन्दर तरीके से लगाया गया है। बस के अंदर मौजूद गाइड आपको तीन अलग-अलग भाषाओं, हिंदी, गुजराती और अंग्रेजी में जगह के बारे में सब कुछ बताता है। इसके अलावा हवाई दृश्यांकन के लिए सशुल्क हेलीकॉप्टर सेवा भी उपलब्ध है। हेलीकॉप्टर की सवारी से आंगतुक स्टैच्यू ऑफ यूनिटी, सरदार सरोवर बांध, नर्मदा नदी और सतपुड़ा और विंध्य पहाड़ियों का हवाई महिमा पूर्ण दृश्य अवलोकन कर सकते है।

स्टैच्यू ऑफ यूनिटी अपनी असाधारण इंजीनियरिंग कौशल से दुनिया के सबसे महान 100 स्थानों में (टाइम्स सर्वे) अपना स्थान बनाने के बाद, पर्यटकों को निरंतर आकर्षित कर रहा है। ऐसा पाया गया है की 25 अगस्त 2019, रविवार को 34,000 से अधिक पर्यटकों ने स्टैच्यू ऑफ यूनिटी का दौरा किया। यह एक ही दिन में स्टैच्यू ऑफ यूनिटी का दौरा करने वाले पर्यटकों की सबसे अधिक संख्या है। इसके साथ साथ सरकार ने स्टैच्यू ऑफ यूनिटी परियोजना से प्रभावित नर्मदा जिले के ग्रामीणों के पुनर्वास के लिए कई उपाय किए हैं जिसमे मुआवजे और वैकल्पिक रोजगार शामिल है। उन्हें हाउसकीपिंग, सुरक्षा और परिचारकों के लिए टूरिस्ट गाइड बनने का प्रशिक्षण दिया गया है।

स्टैच्यू ऑफ यूनिटी: पैर के अंगूठे की ऊंचाई 3.6 मीटर

स्टैच्यू ऑफ़ यूनिटी को आज विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा का कीर्तिमान प्राप्त है। यह पिछले रिकॉर्ड धारक, चीन के हेनान प्रांत में स्प्रिंग टेम्पल बुद्ध की तुलना में 54 मीटर ऊँची है और न्यूयॉर्क में स्टैच्यू ऑफ लिबर्टी से लगभग दोगुनी ऊँची है।

इस विस्तृत वर्णन के उपरांत आप समझ ही गए होंगे की स्टैच्यू ऑफ़ यूनिटी कोई चमत्कार से कम नहीं है। वास्तव में जैसे ही मैंने कावड़िया क्षेत्र में प्रवेश किया तो एक अपूर्व शक्ति का आभास हुआ जो कदमो की रफ़्तार बढ़ा कर मानो प्रतिमा की तरफ निरंतर आकर्षित करती है। मुझे यहाँ आने पर सरदार पटेल के जीवन की भव्यता के साथ-साथ राष्ट्रीय एकता के महत्व की दिव्य अनुभूति को महसूस करने का अविस्मरणीय अवसर मिला। हमें भारत की एकता के प्रतीक इस अद्वितीय विश्व प्रसिद्ध सरदार पटेल की प्रतिमा पर गर्व है।

कमलेश के गुलिया, पी एच डी
वैज्ञानिक एफ प्रभारी, निद्रा अनुसंधान विभाग
बायोमेडिकल टेक्नोलॉजी विंग, सैटलमॉन्ड पैलेस
श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान, त्रिवेंद्रम
(भारत सरकार के अधीन राष्ट्रीय महत्व का संस्थान)
पूजापुरा, तिरुवनंतपुरम 695012
केरल, भारत

भारत में पार्किंसंस रोग के आनुवांशिक आधार की पहचान करने के लिए श्री चित्रा को भारत-जर्मन अनुसंधान को यू.एस से 2.3 मिलियन वित्त पोषण।

तिरुवनंतपुरमः श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान के नेतृत्व में जीनोम वैड एसोसिएशन स्टडी [Genome-wide Association study(GWAS)] ने भारत में पार्किंसंस रोग के आनुवंशिक आधार की पहचान करने के लिए 2.3 मिलियन का वित्त पोषण प्राप्त हुआ। यह भारत में पार्किंसंस बीमारी पर पहला जीव अध्ययन होगा। इसे तंत्रिका विज्ञान से संबंधित बीमारी पर सबसे बड़े जीव अध्ययन में से एक होने का गौरव भी प्राप्त हुआ है।

श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान के संचालन अनियमितता विशेषज्ञ डॉ.आशा किशोर, डूरबिनजेन विश्वविद्यालय के डॉ. मनु शर्मा द्वारा प्रस्तुत अनुसंधान प्रस्ताव के लिए अमेरिका के कार्किंसंस रोग अनुसंधान एजेंसी माईकल जे फॉक्स फाउणडेशन द्वारा 2.3 मिलियन अमेरिकन डोलर का सहायक राशी प्राप्त हुआ। श्री चित्रा के व्यापक संचालन अनियमतता केंद्र के नेतृत्व में हो रहे अध्ययन में देश के स्वास्थ्य एवं अनुसंधान क्षेत्र के 20 प्रमुख संस्थानें भी शामिल है।

आनुवंशिक जानकारी के सूक्ष्म विशलेषण के कोशिकीय एवं आवणिक जीवविज्ञान केंद्र के संयुक्तता में किया जाएगा।

श्री चित्रा अलावा एयिम्स,नई दिल्ली,निंहान्स,बैंगलूर,निसांस इंस्टीटूट ऑफ मेडिकल साईंसस, हैदराबाद आदी नोडल साईट्स है। पीजीआई झंडीगढ़, एयिम्स,ऋषिकेष, इंस्टीटूट ऑफ न्यूरोसाईंसस, कोलकत्ता,विक्रम होस्पिटल, बैंगलूर,विजय इंस्टीट्यूट ऑफ क्लिनिकल आण्ड मेडिकल रिसर्च, चेन्नई, कोयम्बत्तूर, गोवा मेडिकल कॉलज, लूर्द अस्पताल, एरणाकुलम, ग्लोबल अस्पताल, जस्सोक अस्पताल, धीरूबाई अंबानी अस्पताल, मुंबई,नारायण हृदयालय बैंगलूरू आदि 16 केंद्रों के तंत्रिका वैज्ञानिकों,आनुवांशिक विशेषज्ञों आदि के अध्ययन का हिस्सा रहेगा।

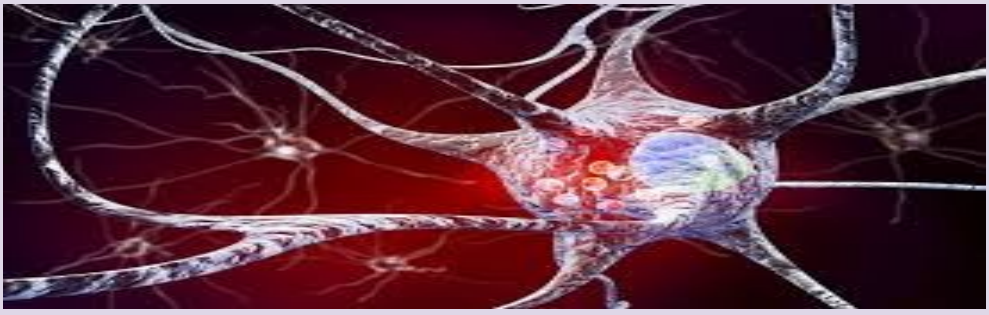

घरेलू माँ से सूपर हीरो माँ

दो साल पुरानी कहानी है। मेरा बेटा पाँच साल का था, तब उसकी दुनिया और हमारा घर सूपर हीरों से भरा था। सूपरमैन, स्पाइडरमैन,बाटमैन,कपतान अमरिका और न जाने कौन-कौन से पुतले घर ज़मीन पर कबज़ा कर बैठे थे ।कोई मकडी की जाल की तरह कपड़ा पहने तो कोई छाती पर चमकता हुआ तारा लिए, कोई हतौड़ी पकड़ते थे, किसी की हाथ में कटार। मेरे बेटे के साथ-साथ सभी दुनिया के रक्षक बने हुए थे।

कक्षा में पढ़ाए हुए पाठ लिखने-पढ़ने को कहो तो " अम्मा ईट ईस डिफिकल्ट" और इन किलमोन्गर, यलट्रोन, वोलवरीन इत्यादी के नाम ही नहीं उनके द्वारी लडी हुई जंग, उनके हथियार, उनकी अमानुषिक शक्तियाँ और यहाँ तक की उनकी गलफ्रेंण्ड का नाम याद रखना और घंडों तक उनके बारे में चर्चा करने में मेरे बेटे के कोई मुशकिल नहीं थी।

मेरे बेट्टे को हमारे फ्लैट में इसकी उम्रवाले दूसरे बच्चों के पास कौन-कौन सी नई सूपरहीरोस की कटपुतलियाँ है, यह सब कहाँ से खरीदी गई, सब जानकारी है। शाम को फ्लैट के पार्क में खेल का लीडर वही बनता है, जिसके पास ज्यादा नए सूपरहीरोस हैं। इन की सभी खेल भी इन सूपर हीरोस पर आधारित है ।इसलिए ही जब भी मेरे साथ सूपरमारकेट या मॉल में आता, मेरे बेटे की नज़र इन सूपरहीरोस पर ही होता है। मुझे इसमें बिल्कुल दिलचस्पी नहीं है।

हर दिन की तरह, एक दिन वह अपनी सुपरहीरोस के खेल में इतना व्यस्थ था कि मेरे फिसल कर गिरने, चीकने-चिल्लाने की आवाज़ तक उसे सुनाई नहीं देती थी। मुझे बहुत गुस्सा आया और मैं ने उसे बहुत डाँटा और सूपरहीरोज़ के नमुनों को रद्दी में बेचने की बात कही। अचानक मेरा गुस्सा देखकर वह डर गया और उदास होकर कमरे के एक कोने में जा कर बैठ गया। मैं भी घर के काम में व्यस्थ थी और उसे मनाने का समय नहीं मिला।

शाम को फ्लैट के नीचे बच्चों के खेलने की आवाज़ सुनाई दी। वह भी खेलने के लिए उत्सुक हुआ और मुझसे अनुरोध करने लगा। सूपरहीरोज़ के बिना खेलना मंज़ूर है तो ठीक है, मैं ने भी शक्त शब्दों में जवाब दिया। वह तैयार था। सुबह की मायूसी दूर करने के लिए मैं भी उसके साथ नीचे जाने के लिए तैयार हुई। दरवाज़े में ताला लगाते समय मैंने अपना फोन उसके हाथ में दे दिया था। नीचे आस-पडोस के लोगों से मिले और मैं बातें करने लगी। फोन उसके हाथ में ही रह गया।

कुछ ही देर में वह दौडकर मेरे पास आया और फोन देते हुए कहा " आयरनमैन ईस कॉलिंग " जल्दी फोन उठाओ नहीं तो, कॉल कट हो जाएगा।

'दिन में दस बार फोन करो तो भी नहीं उठाता, कपडे इस्त्री करने ले गया था , एक हफ्ता हो गया, अभी तक वापस नहीं लाया। मैंने थोडे गंभीरता से उससे कहा कि यह लेन-देन यहां नहीं चलेगा, काम करना है तो समय पर, नहीं तो मैं और लोगों को जानती हूँ, काम उनको दूँगी।' इतना कहकर कॉल कट कर दिया।

मेरा बेटा वहीं मुंह खोलकर खडा था। अचानक उसने बहुत उत्सुकता से पूछा "अम्मा आपको आयरनमैन ने बुलाया था ? उसके मासूम दिमाग में आया कि उनके सूपरहीरो अयरनमैन उसकी अम्मा को बुला रहा है और अम्मा उसे डाँटती है। असल में मैं इस्त्रीवाले भैया का नाम जल्दी- जल्दी में आयरनमैन कर के फोन में सेव कर लिया था।

उसका उत्साह और जोश को देखकर उसे तुरंत निराश करने का मन नहीं हुआ। अगले दिनों में भी मैं ने बहुत बार सच बताने की कोशिश की, लेकिन उसे उसकी काल्पनिक लोक से धक्के दे कर नीचे गिराने का मन नहीं किया।

हम सब अपने-अपने काल्पनिक लोक में रहना ही पसंद करते हैं, इस्त्री भैया आयरनमैन बने हुए उस काल्पनिक लोक में मेरा बेटा मुझे सूपरहीरो अम्मा ही मानता है और मैं भी इस भूमिका को बहुत ही जोश से निभा रही हूँ।

जब मेरा बेटा थोड़ा और बड़ा हो जाएगा, दिल का थोड़ा ओर मज़बूत हो जाएगा, तो एक दिन उसे उसके आयरनमैन, यानी मेरे इस्त्री भैया से मुलाकात करानी ही है, तब तक के लिए मैं उसकी सुपरहीरो मोम.....

डॉ.अमिता आर.नायर
सहायक प्राध्यापक
रक्त-आधान विभाग

आप लोगों ने मुझे साहसिक बनाया

राम ऐसे व्यक्ति है जिन्होंने विवाह के अलावा जीवन में कोई खास साहसिक काम नहीं किया है। उन्होंने भौतिकी विज्ञान के कक्षाओं से बैक एवं साइकिल के अगतिशील एवं चालन अस्थिरता के संबध में पढ़ते ही उन्होंने उन दोनों को छोड दिया। लोगों द्वारा निजी परिवहन माध्यमों का उपयोग करने से कार्बन फुटप्रिंट को बढाता है, यह जानकर कार को भी छोड दिया। उसके बाद बसों में सफर करते है, वो भी अधिकतर के. एस. आर.टी.सी में।

उनको 'पागल' कहने वालों से वह कहता है कि आगे आने वाले पीढ़ी को भी यहाँ जीना है, उस केलिए कुछ करना पागलिक है तो उससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता । राम का दम भरा डयलोग सुनकर आखिर भारतीय ट्रोल करने वाले लोग भी शर्म से मारे चुप हो गए।

के.एस.आर.टी.सी की आर्थिक मुसीबतों के बारे में कई सालों से जानते हुए भी उनको यही उम्मीद थी कि सब ठीक होगा। इसलिए निगम की तरफ से आय बढाने के लिए उठाए गए कदम को उन्होंने हृदय से स्वागत किया। के.एस.आर.टी.सी ज़िन्दाबाद!

कार्यालय जाने के लिए बस स्टेन्ड पर पहूँचे राम ने उस दृश्य को देख चौंक उठा। मेले के जैसे लोग! और बस मोहनलाल के जैसे एक तरफ थोडी झुककर स्टेन्ड में जा रहे थे, तुरंत लोग बस के दीवार की ओर लक्ष्य साधकर दौड पडे। बाद में साहसिक एवं शारीरिक अभ्यास का प्रकड़न देखने को मिलता है। फुटवोर्ड में खड़े होने के लिए थोडा सा जगह मिलने वाला भाग्यवान दूसरे लोगों को देख कर ऐसा हँस्ता है कि उन्होंने बहुतों को पराजित किया हो।

राम ने बिना भीड़ वाले बस का इंतज़ार किया। वह इंतज़ार कठिन एवं निराशाजनक था। इस बीच उन्हें यह समझ में आया कि के.एस.आर.टी.सी में यात्रा करने के लिए केवल टिकट का पैसा काफी नहीं है, इसके साथ-साथ साहसिक होना भी ज़रूरी है। उन्होंने मन ही मन कहा कि 'मेरे के.एस.आर.टी.सी , तुमने मुझे भी साहसिक बनाया।'

साहसिकों से बिना टक्कर खाए सीट में बैठकर आराम से सोने वाला राम फुडबोर्ड में थोडी सी जगह के लिए उस दिन लडा। फुडबोर्ड से ऊपर जाने के लिए और भी लडाई लड़नी है। परेशानियाँ यहाँ पर खत्म नहीं होती, यदि भीड में महिलाएँ आस-पास है तो भीड में सावधानी बरतनी है, नहीं तो बलात्कार केस में फंस जाने की संभावना काफी है। इसके विपरीत कुछ हुआ तो बिना गलती के सरकार की ओर से प्राप्त सुविधाओं से जीवन बढ़ाने का भी मौका मिल सकता है।

के.एस.आर.टी.सी की साहसिक यात्रा के लिए मुख्यतः 3 भाग है। फुडबोर्ड तक पहूँचना, उधर से ऊपर दो पैरों में खडे होने तक का दूसरा भाग होता है। अपने स्टोप पहूँचते ही तीसरा भाग का शुभारंभ होता है। स्टोप में उतरके ऐसा प्रतीत होता है कि अखाड़े से निकलने हो।

असल में डॉक्टरों को चीट की तरह होती है यह यात्रा। दिन में दो बार, सुबह को एक , शाम को एक। राम को इच्छा है कि वह शपथ लें कि वह आगे से के.एस.आर.टी.सी में यात्रा नहीं करेंगे, किंतु उनसे सब लोग सवाल करेंगे, "लेकिन राम, आगे की पीढी, उनकी ज़िन्दगी का क्या होगा?"

सब सहन करना ही अच्छा है।

यह पता नहीं है कि हमारे इस राम का रक्तसंबंध मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम प्रभू से है या नहीं।

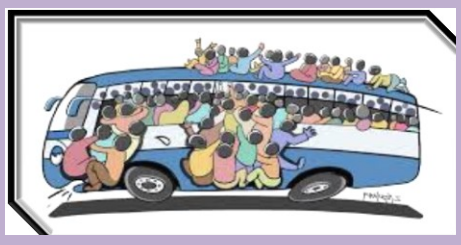

स्मितेश. एस
प्रवर श्रेणी लिपिक

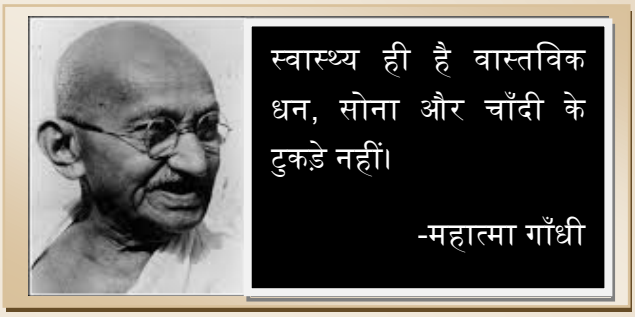

गाँधी और स्वास्थ्य: 150 साल का जश्न

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी न केवल भारत के अब तक के सबसे महानतम नेताओं में से एक हो, बल्कि एक अनुकरणीय दूरदर्शी भी थे। अपनी जीवन शैली के माध्यम से, उन्होंने स्वास्थ्य के साथ संयुक्त सादगी का एक बहुत बड़ा उदाहरण स्थापित किया है।

स्वस्थ मनुष्य के लिए उनकी परिभाषा है- जिसका शरीर बीमारी से मुक्त हो, सकारात्मक ऊर्जा से भरा हो और थकान के बिना अपनी दिनचर्या की गतिविधियों को पूरा कर सकता हो। वह शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ मानसिक स्वास्थ्य एवं भावात्मक स्वास्थ्य का होना महत्वपूर्ण मानते थे।

उनके सिद्धांत के अनुसार मानव शरीर की भलाई पाँच प्रमुख तत्वों, वायु, जल, पृथ्वी, प्रकाश और रिक्ति के बीच सामंजस्य पर निर्भर रहती है। यह अप्रचलित लगता है, इसमें कोई शक नहीं, किंतु किसी भी स्वास्थ्य विशेषज्ञ इस बात से सहमत होंगे कि साफ और शुद्ध हवा, पानी, पृथ्वी के साथ पर्याप्त प्रकाश एक स्वस्थ समुदाय का मूल तत्व है। पर्यावरण इतना चिंता का विषय बन गया है कि दुनिया भर के राष्ट्र सतत विकास की दिशा में काम कर रहे हैं।

गाँधी के अनुसार, एक स्वस्थ जीवन के लिए खुद पर नियंत्रण अत्यंत महत्वपूर्ण है और अगर दृढ संकल्प के साथ संयुक्त रूप से विचारों और क्रियाओं को काबू में ला सकें तो सफलता निश्चित हैं।

वह सख्त शाकाहार के पक्ष में थे , क्योंकि मांस का खपत उनके लिए अपने अहिंसावादी विचारधारा का उल्लंघन करता है। उनके अनुसार एक व्यक्ति के लिए प्रति दिन तीन बार भोजन लेना पर्याप्त है, और भोजन को दवा की तरह उचित मात्रा में उचित समय पर लेना चाहिए।

2015 में विश्व स्वास्थ्य संगठन बेकन, होम, सोसेजेस और अन्य प्रसंस्कृत मांस को कैंसर का एक प्रमुख कारण घोषित किया है, इन्हें एसबटोस, शराब और तंबाकू की उसी श्रेणी में डाल सकता है। डब्ल्यू एचओ के अनुसार रेड मीट "मनुष्यों के लिए कैंसरजनक" है। कैंसर शोधकर्ताओं द्वारा इस फैसले का स्वागत किया, किंतु मांस उद्योग वाले इससे नाराज भी थे।

वह शराब और ड्रग्स के सख्त खिलाफ थे, "शैतान की दौ भुजाओं जिसे वह अपने असहाय दासों को जड़ता एवं नशे में मारता है।" उनका मानना था कि सरकार को एकमुश्त प्रतिबंध लगाना चाहिए, भले ही सरकार को भारी नुकसान उढाना पडें। उन्होंने महिलाओं को पीने के खिलाफ आवाज़ उठाने में प्रोत्साहन दिया और उसके साथ-साथ घर में ऐसे ज़हर का प्रयोग करने से पुरुषों को रोकने की भी बात कहीं।

चिकित्सा क्षेत्र की ओर देखा जाए तो, शराब एक ऐसा धीमा ज़हर है, जो सभी अंगों का नुकसान करता है और जब तक शिकार को उपचार शुरू करने के बारे में पता लग जाता है, अपनी सारी संपत्ति शराम बैरन के हाथों सौंप चुका होता है।

हमारे ज्ञान के विपरीत, आज कल के युवकों ने पीने को एक फैशन बना दिया है और ऐसे पैशाचिक उद्योग के संरक्षण को जारी रखा है, भले ही कई क्षेत्रों ने इस पर रोक लगाने की कोशिश की है। उनकी मान्यताओं में सबसे महत्वपूर्ण बात व्यक्तिगत एवं सामुदायिक स्वच्छता पर है। उन्होंने साफ पानी की ज़रूरत के साथ-साथ साफ –सुधरा शौचालय और समाज के स्वास्थ्य के प्रति अपने योगदान को समझा है।

हम जानते हैं कि गाँधीजी सबसे प्रसिद्ध समाजवादी थे। उनके अनुसार कतार में खडे अंतिम व्यक्ति की चिंता, हमारे संविधान के लेखन के लिए उचित मार्गदर्शन है। स्वास्थ्य देखभाल एक श्रम-प्रधान उद्योग है, डॉक्टरों और नर्सों की तुलना में सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को अपेक्षाकृत कम भुगतान दिया जाता है जो हमारे देश में बडा फर्क ला सकता है। भारत में उदाहरण के लिए, 60 प्रतिशत से ज़्यादा स्वास्थ्य में किए जाने वाला खर्च बरबाद होने के जोखिम को समाप्त कर दें तो इस धन से अधिक सेवाएँ प्रदान की जा सकती थी।

विकास के दौरान हम अपने ही वातावरण को भूल जाते हैं। यूरोप के औद्योगिक क्रांति से लेकर, प्रकृति को मुनष्य के प्रयत्नों से दिए गए नुकसान का खामियाजा भुगतना पडा है। गाँधीजी का विश्वास पर्यावरण संप्रेषणीयता पर दृढ था और अन्य जीवों को नुकसान पहूँचाने के खिलाफ था, जो अहिंसा के सिद्धांत थे। यह बार-बार साबित हो चुका है कि प्रकृती मनुष्यों की गलतियों को कभी क्षमा नहीं करता ।

आज भी भारत में मृत्यु दर और रुग्णता का बहुत बडा कारण बीमारी है जिसे केवल पीने योग्य पानी की व्यवस्था और उचित स्वच्छता से रोका जा सकता है। यह मातृ और शिशु मृत्यु दर के आंकडों को बहुत कम कर सकता है जो भारतीय स्वास्थ्य देखभाल की महिमा का धब्बा है। हालांकि वर्तमान सरकार ने स्वच्छ भारत अभियान और स्वच्छ गंगा के लिए राष्ट्रीय मिशन जैसे स्वच्छता अभियानों को लागू किया है, लेकिन एक स्वच्छ राष्ट्र के बापू के सपने को प्राप्त करने के लिए हमारे पास अभी भी एक लंबा रास्ता बाकी है।

हमारा राष्ट्र सही मायने में तभी स्वस्थ कहलाएँगा जब सुदूरतम गाँव में रहने वाले सबसे अनपढ़ व्यक्ति को न केवल सर्वेत्तिम स्वास्थ्य सुविधा का उचित उपयोग मिल सकेंगे, बल्कि अपने पूरे बचत को खर्च किए बिना बुनियादी चिकित्सा सुविधाओं का लाभ उठा सकेंगे। प्रधान मंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना को लागू करके भारत सरकार ने सस्ता और विश्वसनीय तृत्तीयक स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता में क्षेत्रीय असंतुलन को ठीक करने और देश में गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा शिक्षा की सुविधाओं को बढाने की दिशा में कदम उठाया है। हमारे नेताओं ने शहरों, कस्बों, सड़कों, कार्यक्रमों, संस्थानों और यहाँ तक कि अस्पतालों को उनके बाद उनका नाम देकर श्रद्धांजली दी है। हालांकि, हम उसी दिन उन्हें सही रूप से सम्मान देंगे जब हम अपने देश के स्वास्थ्य सेवा को

स्वर्ग बना देंगे, जहाँ हर व्यक्ति को स्वस्थ भोजन , शुद्ध पानी और उचित स्वच्छता और चिकित्सा की सुविधाएँ पर्यावरण को किसी भी तरह की क्षति पहूँचाए बिना प्रदान करेंगे।

अंत में मैं उस महान व्यक्ति को उनके ही शब्दों में उद्धृत करना चाहूँगा, स्वास्थ्य ही है वास्तविक धन , सोना और चाँदी के टुकड़े नहीं।

.....

डॉ. दीपांजन भट्टाचार्या
वरिष्ठ निवासी

अगर रास्ता खूबसूरत है तो,

पता कीजिए

किस मंजिल की तरफ जाता है!

लेकिन अगर मंजिल खूबसूरत हो तो,

कभी रास्ते की परवाह मत कीजिए!!

मेहनत का फल और

समस्या का हल

देर से ही सही मिलता जरूर है....

टोटेम पोल्स (कुलदेवता के स्तंभ): एक अद्वितीय कलात्मक संस्कृति की झलक

विश्व भर में अनेक राष्ट्रों की विभिन्न जनजातियों एवं संस्कृतियों ने अपनी अपूर्व विरासत को अदुभुत कलात्मक और भावपूर्ण तरीके से सजोया हुआ है जिसका एक जीवंत उदाहरण है टोटेम पोल्स। टोटेम पोल्स यानी कुलदेवता के स्तंभ एक प्रकार की अनूठी स्मारकीय नक्काशी शिल्पकला है जिसमें प्रतीकों या आकृतियों को बड़े पेड़ों (ज्यादातर लाल या पीले देवदार) से निर्मित डंडे, पोस्ट या खंभे पर तराशा जाता है। यह कला विशेष रूप से पहले राष्ट्र (यानी कनाडा के आर्कटिक सर्कल के दक्षिण से प्रमुख स्वदेशी लोग) और प्रशांत नॉर्थवेस्ट तट स्वदेशी लोग सहित दक्षिण-पूर्व अलास्का और ब्रिटिश कोलंबिया में उत्तरी उत्तर पश्चिमी तट हैडा, त्लिंगित और तिमिशियन समुदायों, दक्षिणी ब्रिटिश कोलंबिया में क्वाक्वाका'क्वक और नुउ-चा-नुल्थ समुदाय, और वाशिंगटन और ब्रिटिश कोलंबिया में कोस्ट सैलिश समुदाय में प्रचलित है।

टोटेम पोल जनजातियों के इतिहास, किंवदंतियों, कहानियों या महत्वपूर्ण घटनाओं को चित्रित करते हैं। यह विशेष रूप से सराहनीय है क्योंकि यह कला रूप पूरी तरह से जैविक और पर्यावरण के अनुकूल है। प्रत्येक टोटेम पोल पर, मानव और जानवरों की आकृतियों का उपयोग करके एक पूरी कहानी का चित्रण किया जाता है। जानवरों में अक्सर बाज, रेवेन, थंडरबर्ड, भालू, बीवर, भेड़िया, किलर व्हेल और मेंढक को दर्शाया जाता है। ऐसा बताया जाता है की टोटेम के खम्भों को बनाने के लिए तेज पत्थरों, समुद्र के गोले, हड्डियों, और ऊदबिलाव वाले दांतों का उपयोग किया जाता था परन्तु आजकल मशीनों का उपयोग भी होता है।

अब मैं आपको वैंकूवर के स्टेनली पार्क में स्थापित टोटेम पोल पार्क ले जा रही हूं। दाईं ओर पहली तस्वीर येल्टन मेमोरियल पोल है जिसको रॉबर्ट येल्टन ने अपनी मां, रोज कोल येल्टन, की याद में बनाया था।

येल्टन मेमोरियल पोल

अगले कुलदेवता स्तम्भ थंडरबोल्ट हाउस पोस्ट पोल को १९ शताब्दी के प्रारंभ में क्वाक्वाकाक्वक समुदाय के कलाकार चार्ली जेम्स द्वारा बनाया गया था जिसकी ऊंचाई ३ मीटर है। इसमें थंडरबर्ड, ग्रीज़्ज़ली भालू को एक आदमी को पकड़े दर्शाया गया है। सफ़ेद, स्याह, लाल और पीले रंगो से संजोये हुए यह थंडरबोल्ट हाउस पोस्ट बहुत ही आकर्षित करता है।

थंडरबोल्ट हाउस पोस्ट पोल

टोटेम पोल पार्क, स्टेनली पार्क, वैंकूवर, कनाडा

स्कैडंस मुर्दाघर पोल

सालिश डांसर एंड किलर व्हेल द्वार

कुछ अलग दिखने वाला स्कैडंस मुर्दाघर पोल (मोर्चरी पोल) यहाँ स्थापित ८ मीटर ऊँचा एकमात्र हैडा पोल है इसमें चांद में आधे मानव और आधे बाज के चेहरे वाले मुखिया को चित्रित किया गया है। मुर्दाघर पोल में मृत मुखिया के अवशेष को एक बक्से में रखा जाता है जिसको पोल के सामने वाले पैनल के ठीक पीछे स्थापित किया जाता है। इसके अलावा सींग और खुर वाली पहाड़ी बकरी, व्हेल पकडे हुए ग्रीज़्ज़ली भालू को दिखाया गया है।

सालिश डांसर एंड किलर व्हेल द्वार में सालिश नर्तिका को समुद्री सर्प रैटल के साथ, और थंडरबर्ड को द्वार के एक तरफ ऊपर दिखाया है। द्वार के दूसरी तरफ पेड़ की जड़ का डिजाइन समुद्र, जमीन और आकाश से संबंध को उजागर करता है। इनके अलावा टोटेम पोल पार्क में अनेक पोल्स है, प्रत्येक पोल की एक विविध कहानी है, युग संस्कृति का वर्णन है। टोटेम पोल्स को पूजा स्थल नहीं माना जाता है।

यह एक भौगोलिक संयोग है की पश्चिम में प्रशांत महासागर ने उत्तर पश्चिमी तट की संस्कृति को दुनिया के बाकी हिस्सों से काट दिया था इसके वावजूद उत्तर पश्चिमी तट स्थित स्वदेशी/ आदिवासी लोगो ने समुद्र और देवदार की भूमि में वहां की मूलभूत संस्कृति को सदियों से सींचा और संजोया।

इनका प्रकृति के साथ अनूठा समवन्य एक मिसाल है। इन लोगों ने लंबी सर्दियों के दिन-रातो में खुद को कलात्मक और सांस्कृतिक जीवन के लिए समृद्ध किया। बुनाई, पेंटिंग और नक्काशी से कुलदेवता पोल्स बनाना सीख कर जीवन और संस्कृति को एक नया आयाम दिया जो की आज की तकनीकी पूर्ण मशीनी युग में भी एक विचित्र कहानी दर्शाता है और एक असविमरणीय छाप छोड़ता है।

कमलेश के गुलिया, पी एच डी

वैज्ञानिक एफ प्रभारी, निद्रा अनुसंधान विभाग

बायोमेडिकल टेक्नोलॉजी विंग, सैटलमॉन्ड पैलेस

श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान,

त्रिवेंद्रम

(भारत सरकार के अधीन राष्ट्रीय महत्व का संस्थान)

पूजप्पुरा, तिरुवनंतपुरम 695012, केरल, भारत

श्री चित्रा और विप्रो का हाथ मिलाप

चित्रा-स्वचलित एएमबीयू वेंटीलेटर प्रौद्योगिकी विप्रो एंटरप्राइजेज को सौंपा गया।

केंद्रीय विज्ञान के एक प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अधीनस्थ राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त संस्थान, श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान द्वारा कृत्रिम मेनुअल ब्रीथिंग यूनिट (एएमबीयू) पर आधारित आपतकालीन वेंटिलेटर पद्धति विकसित की गई है। इसका तकनीक विप्रो एंटरप्राईजेज लिमिटेड को सौंप दिया गया है। यंत्र के निर्माण से संबंधित नैदानिक पूर्व परीक्षण आदि से जुडे आगे का काम विप्रो द्वारा किया जाएगा।

कोविड-19 विश्व भर में फैल रहा है। संक्रमित लोगों की संख्या प्रतिदिन बढ़ती जा रहा है। आपात स्थिति में वेंटिलेटर की आवश्यकता बढ़ गई है। किंतु भारत के अस्पतालों में वेंटिलेटर पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं है।

प्रस्तुत परिस्थिति में कृत्रिम मैनुअल ब्रीथिंग यूनिट मददगार साबित होगा। एएमबीयू बैग या बैग-वाल्व मास्क(बी.वी.एम) हाथों से चलने वाला उपकरण है, जिसका उपयोग उन रोगियों को ऑक्सिजन प्रदान करने के लिए किया जा सकता है जिसे सांस लेने में दिक्कत होया आस्थामा के मरीज हो। आमतौर पर एएमबीयू के संचालन के लिए रोगी के साथी को रोगी के साथ मौजूद होना चाहिए। किंतु संक्रमण रोग के फैलाव की जोखिम होने के कारण इस अवस्था में रोगी की साथी से मदद लेना व्यावहारिक नहीं होगा।

स्वचलित एएमबीयू वेंटिलेटर का विकास इस समस्या का समाधान है। आपातकाल की स्थिति में यदि मरीजों को आईसीयू वेंटिलेटर उपलब्ध नहीं है तो उन्हें ऑक्सिजन देने के लिए इसका प्रयोग किया जा सकता है। वर्तमान स्थिति में देश में उपलब्ध घटकों की मदद से वेंटिलेटर का निर्माण तेज़ी से हो पाएगा। इससे वेंटिलेटर की कमी के कारण उत्पन्न समस्याओं का समाधान हो सकेगा।

हल्के हाथों में लेकर चलने वाला उपकरण में सांस की दर, श्वसन दर, टाईडल वोलियम को नियंत्रित कर सकते हैं।

पीईईपी वाल्व को अतिरिक्त रखकर श्वसन प्रणाली के करीब अंत में रहे दबाव को बनाए रखकर सांस बाहर निकालने वाले समय में फेफडे के वायु छिद्र को नष्ट होने से बचाएगा। हवा के स्रोत को उपकरण से जोड़ा जा सकता है। स्वचलित उपकरण होने के कारण इसका प्रयोग करने के लिए किसी को आईसोलेषन कमरे में रहने की ज़रूरत नहीं है। जिससे कोविड रोगियों की फेफडे को बचाने की उपचार सुरक्षित एवं प्रभावी ढंग से हो पाएगा। इस तकनीक का विकास श्री चित्रा के विसंज्ञन विभाग के डॉक्टरों के मार्गदर्शन से आयुर्विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी स्कंध के कृत्रिम विसंज्ञन विभाग के डाक्टरों के मार्गदर्शन से आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी स्कंध के कृत्रिम अंग(Artificial Organs) विभाग के श्री शरद (इंजीनीयर ई) श्री नागेश , आदि के नेतृत्व में एक टीम द्वारा केवल एक सप्ताह में किया है।

संस्थान में ऑनलाइन द्वारा आमंत्रित इच्छुकती (Expression of Interest) के अनुसार विप्रो 3डी प्रभाग से तकनीकी प्रभाग में प्रवेश कर डिवाईज के मॉडल और प्रदर्शन का मूल्यांकन किया गया।

इसके पश्चात यह निर्णय लिया गया कि विप्रो को यह प्रौद्योगिकी हस्तांतरित करेंगे। इसके भीतर डिज़ाईन,प्रौद्योगिकी उपकरण के विनिर्देश, यंत्र को एसेंबली फ़ंक्शंस(Assembly), परीक्षण विधियाँ(Testing Methods)संबंधित मानदण्ड(Relevant Standards) आदि तकनीकी जानकारी शामिल हैं। तकनीकी को समझने के लिए श्री चित्रा विप्रो की मदद करेगा। इसके अतिरिक्त श्री चित्रा अपने कर्मचारियों को ऑनलाईन प्रशिक्षण भी प्रदान करेगा। उत्पादन शुरू करने से पूर्व विप्रो द्वारा उपकरण के गुणवत्ता तथा कानूनी अनुपालन भी सुनिश्चित करेंगे।

कोविड19 के प्रकोप के इस वर्तमान स्थिति में देश के समर्थन के लिए दोनें दलों ने सहयोग करने का फैसला लिया है। अनुबंध पर जल्द हस्ताक्षर करने का मूल कारण भी यही है।

इंतज़ार

हर रोज़ बदलती है ज़िन्दगी
जीने का ढंग
सोचने का तरीका
फिर भी सच
अपना पुराना ओढ़े
वहीं रहती है
जहाँ था वह पहले
मगर अपने आप
में विराटता लेकर।
मैं तन्हा थी
उस वक्त भी
आज भी हूँ तन्हा
इस वक्त जब साथ कई है जीवन में।
खुशी के पलों को पुकारूँ क्या मैं ज़हर
क्योंकि तनहाई में
मीठा भी कडवा लगता है।
यादों से रहा
रिशता मेरा हमेशा
रहकर यादों में सदा
में भूल गई
बन रहे हैं
वक्त भी यादें
क्यों अक्सर भूल मैं जाती हूँ
भूत-भविष्य के
बीच है वर्तमान
हवाओं के बदलते
देख रूप को
साथ छोड़ते सूरज को
क्यों ढल जाता है
उम्मीद मेरे जीने की....

रोशन चाँद-सितारे
ठंडी-महकती हवा
क्यों जगाते नहीं मुझमें
नई ख्वाहिशों को?

बंद कमरे मैं भी
वही एहसास है
जो मिलता मुझे
है खुले जहाँ में है।

नाराज़ मैं हूँ
तो आखिर किससे
क्या उससे, जिसने
दिया मुझे सबकुछ
या फिर खुद से
जो कभी नहीं
समझ पाया
अपनों को ही अपना....

बढ़ूँ तो आगे कैसे?
कहीं धोका तो
दे नहीं रही हूँ?
खुद को फिर से...
बिन खुशी हँसना
बिन दुःखी रोना
पता नहीं सीखा
यह सब मैंने कब ?

सवाल बनकर रह चुकी हूँ
जिसका जवाब शायद
मिले न कभी
क्योंकि पता है मुझे
छुपी है मुझमें ही जवाब।
क्यों नहीं आती
परेशानी की लकीरें मुझमें?
क्यों नहीं ठहरती
हँसी की घन-घनाहट मुझमें?
क्यों वक्त गुज़र जाता है?
क्यों वह यादें बन संजोता हैं?
क्यों मुझे तनहाई पसंद है
क्यों मुझे मैं खामोश नज़र आती हूँ?
काश सब कुछ
उतना आसान होता
जितना बनते-बिगडते
लहरों की रेखाएँ।
काश मैं लहर होता
जो हर वक्त
अपने मंसिल को
पाने की चाहत में
बार-बार लौट आते
मगर बदनाम न हो बस
चुप्पी बरतकर फिर
गहरी तनहाई में समा जाते।
मैं किसी की 'हाय' में
लपेटना नहीं चाहता
ज़िन्दगी में
ना ही दूसरों से
अपने लिए वाह वाही
सुननी पसंद करूँगी।
चाहत भी नहीं रही,
उजाला भी नहीं नज़र आ रहे।
क्या फिर से मुझे
खुद को उन्हीं
जालरों में कैद करना होग?
बनते-बिगड़ते नसीब
तुझे क्या चाहिए
तकदीर को ढूँढने निकलता हूँ
तब ख्वाहिशों का
पर कटा पाता हूँ।
आँखों में पनपते उम्मीदों को
पानी का रूप लेता देखता हूँ।
अब चेहरे पर
बचा सिर्फ झुर्रियाँ है
आँख में सूनापन
गला सूखा पडा है,
दिल धड़कता है
मगर धीरे-धीरे
कानों को अब
सुनाई नहीं देता
शब्दों का वह जादू
हर कहीं सन्नाटा है ...
ज़िन्दगी वही है जो आज है
बर्बाद मत कर यारों
इस कीमती चीज़ को
वक्त खुशियाँ लेकर चला जाएगा
सब ठीक होने का इंतजार करते रह मत जाना।

षहनाज़ कबीर
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

चुटकुले

1. एक मास्टरजी के घर में 7-9 मास्टर मेहमान बनकर आ गए....

   मास्टरजी की बीवी बोली, "घर में चीनी नहीं है, चाय कैसे बनाऊँ?"

   मास्टर ने कहा, "चिंता मत करो। तुम सिर्फ चाय बनाकर ले आओ, बाकी

   सब मैं सम्भाल लूँगा।"

   निर्देशानुसार बीवी चाय बनाकर ले आई। सभी मेहमानों से मास्टरजी बोले, "देखो भाई ! जिसके हिस्से में फीकी चाय आएगी, कल हम सब उनके घर मेहमान

   बनकर खाने के लिए आएंगे।"

   सभी मास्टरों ने खुशी-खुशी चाय पी ली। एक ने तो यहाँ तक कह डाला, "मेरी

   चाय में तो इतना चीनी है कि कहीं मुझे डायबटीज न हो जाए..... !!!"

2. ज़रूरत से ज्यादा भगवान को याद मत किया करो क्योंकि....
   किसी दिन भगवान ने याद कर लिया तो....??
   लेने के देने पड़ जाएँगे।

3. दो औरत बात करती जा रही थीं...
   पहलीः पता है, अपने गाँव के सरपंच कोमा में चले गए हैं।
   दूसरीः हाँ बहन, पैसे वाले तो कहीं भी जा सकता हैं।

आगे बढ़ने की जुनून हो अगर....

कभी देखा करो उस नन्हे बीज को, जिसे शायद फेंक दिया था किसी ने बेकार समझकर। उसमें भी वह जुनून छिपा बैठा था, खुद को किसी काम का नहीं समझे जाने के बावजूद अपना आंतरिक तृष्णा को पूरी करने के अटूट जस्बे को लेकर फिर से किसी की मदद लिए बग़ैर, अपनी एक अलग सी मुस्कान लिए आसमान को देखने की हिम्मत की दाद देनी पड़ेगी उस नन्हे बीज की।

हम इनसान है, मगर अक्सर अपने ख्वाइशों से सिर्फ सपनों में ही क्यों रू-ब-रू होते हैं? उन्हें पूरा करने की कोशिश किए बिना ही क्यों चुप रहते हैं? अगर उस फेंके हुए बीज, अपनी इच्छाशक्ति से इतना कुछ बदल सकता है तो हम इनसान क्या कुछ नहीं बदल सकता। बस उम्मीद ही वह शुरूआत है जिसके हाथों में हाथ डाले अपने सपनों को हासिल कर सकते हैं हम।

जीवन जीना एक कला है, उसे जाने बग़ैर हम सालों जीकर भी क्या पाया? एक बार ही सही खुद के सपनों को साकार करने की , हमारे भीतर की जो अद्भुत शक्ति है, उसे निहारकर बस आगे बढ़ने की इच्छाशक्ति लेकर आगे बढ़ो। फिर देखो ज़िन्दगी तुम्हें कितने प्यारे सपने दिखाएँगे। फिर से सब कुछ रोशन होगा, सब कहीं उजाला होगा, ज़िन्दगी इतना खूबसूरती से हर दिन तुम्हारा स्वागत करेगा कि खुद तुम आगे बढ़ोगे पूरे जुनून के साथ।

उम्मीद ना हो ज़िन्दगी में, तुम्हें

सब कुझ बिखरा मिलेगा

कहीं से अगर ज़रा भी

जाग गई उम्मीद, तो दुनिया तुम्हें

उजाले से भरा मिलेगा।

हिन्दी प्रश्नोत्तरी

1) हिन्दी भाषा का प्राचीनतम रूप क्या है?
2) देवनागरी लिपि का विकास किस लिपि से माना जाता है?
3) विश्व का सर्व प्राचीन ग्रंथ किसे स्वीकार किया जाता है?
4) राजभाषा प्रावधाव संविधान की कौन सी धाराओं के एवं अनुच्छेदों में वर्णित है?
5) राजभाषा अधिनियम 1976 के अनुसार, केंद्रीय कार्यालयों में प्रेषित हिन्दी पत्रों का उत्तर हिन्दी में ही दिया जाएगा?
6) हिन्दी का पहला पत्र कौनसा है?
7) संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी। संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग में होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अन्तर्राष्ट्रीय रूप होगा। यह राजभाषा संबंधी संवैधानिक प्रावधान के कौनसे भाग एवं अनुच्छेद के अंतर्गत आता है?
8) भारत का पहला दूरदर्शन केंद्र कहाँ पर था?
9) हिन्दी का प्रथम विश्वहिन्दी सम्मेलन कब था?
10) प्रवासी भारतीयों का प्रथम हिन्दी पत्र कौन सा था?
11) संघ में राजकीय प्रयोजनों के लिए तत्सम प्राधिकृत भाषा एक राज्य और दूसरे राच्य के बीच में तथा किसी राज्य और संघ के बीच में संचार के लिए राजभाषा होगी ?

मुहावरे- साधारण अर्थ के स्थान पर किसी विशेष अलौकिक अर्थ को प्रकट करें, उसे मुहावरा कहते हैं।

- अंगार सिर पर रखना-कठिन कार्य करना
- घर-घर में माटी के चूल्हे होना-सब समान होना
- बालबांका न होना-साफ बच जाना
- कमर खोलना-लड़ाई बंद करना
- उल्टे छुरे से मुँडना-धोखे से अपना काम निकालना
- फूटी आँख न भाना-जरा भी अच्छा न लगना।

1) वैदिक संस्कृत
2) ब्राह्मी लिपि
3) ऋग्वेद
4) धारा 343 से 351 के अनुच्छेद
5) 1976
6) उदन्त मार्तण्ड
7) संविधान का भाग 17, अनुच्छेद 343
8) दिल्ली
9) 10-13 जनवरी, 1975, नागपूर, भारत
10) हिन्दुस्तानी साप्ताहिक(मार्च 1909)
11) अनुच्छेद 346

षहनज़ कबीर
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक
एससीटीआईएमएसटी

नए उन्नत कार्डियोलॉजी(इलेकेट्रोफिसियोलॉजी) कैथ प्रयोगशाला का उद्घाटन माननीय निदेशक डॉ. आशा किशोर द्वारा 14 जून 2019 को हुआ। प्रयोगशाला का उद्देश्य असामान्य हृदय लय वाले रोगियाँ, जिनको पेसमेकर की आवश्यकता है, उनकी देखभाल करना है।

डयालिसिस यूनिट

DIALYSIS UNIT
Sree Chitra Tirunal Institute for Medical Sciences and Technology, Trivandrum
Supported by Bharat Petroleum Corporation Ltd
A CSR initiative
Bharat Petroleum
energising lives
Sree Chitra Tirunal Institute for Medical Sciences & Technology, Trivandrum
DIALYSIS UNIT
A CSR INITIATIVE OF
BHARAT PETROLEUM CORPORATION LIMITED (BPCL)
INAUGURATED BY
PROF ASHA KISHORE
DIRECTOR
SCTIMST
DIALYSIS ROOM

SCTIMST
SCTIMST

NIPRO

श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान , त्रिवेंद्रम

अंतर्राष्ट्रीय योगा दिवस जून 21, 2019

मोलिकुलर जेनेटिक्स और न्यूरोइम्म्यूनोलॉजी

मोलिकुलर जेनेटिक्स और न्यूरोइम्म्यूनोलॉजी यूनिट(निचली मंजिल, ब्लॉक 2, अस्पताल स्कंध) में 26 परवरी, 2020 को सुबह 10 बजे एससीटीआईएमएसी के माननीय अध्यक्ष डॉ. वी. के सारस्वत द्वारा किया गया। राष्ट्रपति ने स्काईप के माध्यम से कार्यक्रम का उद्घाटन किया, इसके बाद माननीय अध्यक्ष की ओर से निदेशक द्वारा दीप प्रज्जवलित कर और पट्टिक कै अनावरण किया। अध्यक्ष ने स्काईप द्वारा समारोह का उद्घाटन किया, इसके पश्चात माननीय राष्ट्रपति की ओर से निदेशक द्वारा दीप प्रज्वलित कर और पट्टिका का अनावरण किया।

मोलिकुलर जेनेटिक्स एवं न्यूरोइम्म्यूनोलॉजी यूनिट का उद्घाटन 26 फरवरी, 2020 को हुआ।

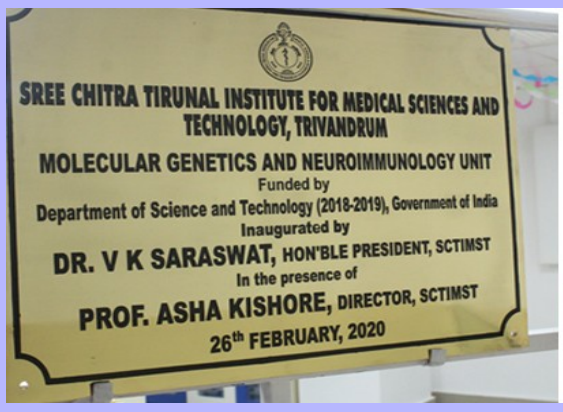

नया अस्पताल ब्लॉक

चित्रलेखा के अगले अंक में प्रकाशित करने के लिए आप भी अपनी हिन्दी के लेख , कहानी, पद्य, अनुभव, चुटकुले, चित्र आदि दे सकते हैं। कृपया अपने लेखन olic@sctimst.ac.in पर भेजें। अधिक जानकारी के लिए हिन्दी सेल से संपर्क करें।